श्री सम्मेद शिखर विधान

मंगल आशीर्वाद

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज

रचयित्री

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी

प्रकाशक

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

Website : www.jainswastisandesh.com

Link to Facebook : swastibhushanmataji

श्री 1008 आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव
दिनांक 1 फरवरी से 6 फरवरी 2023, ज्ञानतीर्थ, मुरैना (म.प्र.)
पावन निर्देशन - परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी
पावन अवसर पर प्रकाशित

कृति : श्री सम्मेद शिखर विधान
एकादश संस्करण : 1100 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष : 2023
न्यौछावर राशि : 25.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)
प्रकाशक : श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

प्राप्ति स्थान :

1. स्वराज कुमार जैन, अध्यक्ष श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)
दूरभाष : 0129-4144329, 9868345768
2. राहुल जैन, सचिव श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)
दूरभाष : 07906062500, 09212515167
3. श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक दिल्ली
दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. श्री आदिनाथ सेवा संस्थान
श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम
शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
दूरभाष : 9784853787

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

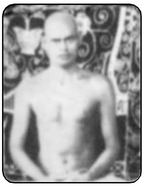

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' (उत्तर)

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

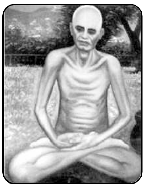

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

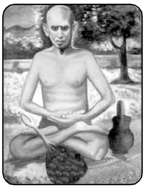

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

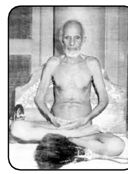

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

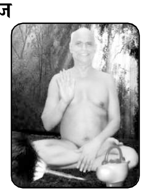

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी)
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व
गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

भावपूर्ण वन्दना

(नमस्कार से चमत्कार)

सेठ जी की तैयारियां बड़े जोर-शोर से चल रही थीं । सम्मेद शिखर की यात्रा थी जो एक लम्बी अवधि में पूर्ण होती थी । यात्रा के समाचार बड़ी दूर-दूर तक पहुंच गये थे । पूर्व समय में सम्मेद शिखर की यात्रा एक दु:साहस कार्य था । निर्धन तो जन्म लेकर सिर्फ चर्चा ही सुनता रहता था तरसते-तरसते मृत्यु का वरण कर लेता, परन्तु सम्मेद शिखर जी के दर्शन नहीं कर पाता था । दो-चार गांव के बीच कोई एक सेठ यात्रा के लिए बड़ा काफिला लेकर जाता था ।

आज सम्मेद शिखर की यात्रा बहुत सरल हो गई है । आज विचारों और कुछ ही समय में पहुंच जाओ । देवा-खेवा नामक दो भाई सेठजी के समक्ष करबद्ध हो प्रार्थना करने पहुंचे कि हम आपके बैलों के लिए घास खोद देंगे, परन्तु हमें सम्मेद शिखर जी ले चलो । सेठजी ने सहज स्वीकृति दे दी । सेठजी ने आज्ञा की, उनसे पहले कोई दर्शन को नहीं जायेगा । देवा खेवा की समस्या कि दिन में घास खोदना । दिल में दर्शन की तीव्र अभिलाषा वे अपने आपको रोक नहीं पाये और रात्रि में दर्शन करने गये । मां ने ज्वार के दाने रख दिये थे वही चढ़ाये । उस समय दर्शनार्थियों को टैक्स लगता था । लौटते हुये देवा खेवा को सिपाहियों ने रोक लिया । मजबूर होकर बैठे रहे, रात्रि में स्वप्न आया कि जमीन खोदो धन मिलेगा । वही टैक्स देकर तुम चले जाना, ठीक ऐसी ही हुआ, परन्तु सिपाहियों ने कहा ये जमीन हमारी है इसीलिये धन भी हमारा है । दूसरी रात फिर स्वप्न में देवों ने उनके सीमा के बाहर जमीन खोदने को कहा । ऐसा ही किया तो जमीन से धन मिला।

इधर सेठ जी दर्शनों को गये देखा चरण के समक्ष किसने हीरे-मोती चढ़ाये । मुझसे बड़ा सेठ कौन यहां आ गया । पता लगाया तो सेठ जी उन दोनों के समक्ष नतमस्तक हो गये । श्रद्धा से ही पूजा और वंदना होती है । अतिशय और चमत्कार तभी होते हैं। शहर लौटकर देवा-खेवा का यश फैल गया । उन्हें फिर स्वप्न में प्रतिमायें बनाने की प्रेरणा मिली और स्वप्न में स्थान निर्देश धन आदि सब कुछ ज्ञात हो गया । स्वप्नानुसार प्रतिमाओं का कार्य शुरू हो गया और इतनी प्रतिमाओं का निर्माण हुआ कि वह क्षेत्र देवगढ़ के नाम से प्रसिद्ध हुआ । नमस्कार शक्ति ही चमत्कार उत्पन्न करती है । चमत्कार को नमस्कार नहीं वरन् नमस्कार से चमत्कार होना चाहिये । इसी कारण वर्तमान में चमत्कार होते हैं । लोगों की आस्था एक डाक्टर पर है, नाई पर है, सरकार पर है, परन्तु देव-शास्त्र-गुरू पर नहीं है ।

यह अपनी श्रद्धा, आस्था और विश्वास के साथ सम्मेद शिखर विधान को करें जिससे अतिशय पुण्य का बन्ध होगा जो आगे हमारे सिद्ध बनने में सहायक होगा । सम्मेद शिखर चातुर्मास में ही ये भाव बने और इसकी रचना सम्मेद शिखर जी में ही की है । आप सभी इसका पाठ करके धर्म लाभ उठायें यही मेरी शुभ भावना है । कम से कम महीने में एक बार अवश्य ही करें, इसी शुभ भावना के साथ अपनी कलम को विराम देती हूँ।

आ. 105 स्वस्ति भूषण
श्री सम्मेद शिखरजी

।। प्रस्तावना ।।

आत्मा और गुणों में भेद नहीं होता, आत्मा के ध्यान से खेद नहीं होता ।
पर्वत तो अनेक हैं इस दुनिया में, पर हर पर्वत शिखर सम्मेद नहीं होता ।।

पावन पवित्र भूमि के चरणों में करोड़ो बार नमन् करूं तो भी कम है। यह इस भूमि का परम सौभाग्य है जिसने अनंत आत्मा को परमात्मा बनाया एवं बनायेगा । ऐसी धरा हमारी वसुन्धरा पर तिलक के सदृश शोभायमान होती है। इसकी पूजा, भक्ति, वंदना, स्मरण, आराधना, उपासना, सभी पुण्यवर्धक, सौभाग्यप्रद, शुभंकर, हितंकर एवं मोक्षप्रद हैं । उसका कण - कण पावन है ।

षट्काल परिवर्तन से भी इसकी पवित्रता में कभी भी कोई कमी आने वाली नहीं । प्रलय काल के समय टोंक के नीचे 卐 स्वस्तिक का चिन्ह मात्र शेष रह जायेगा । पश्चात् देवतागण इसका पुनः नव निर्माण कर फिर वैसे ही रचना कर देगें । त्रिकाल शाश्वत भूमि सम्मेद शिखर का महात्म्य अपने आप में अवर्णनीय है । अतिशय से युक्त अनेक गुणों को धारण करने वाला यह पर्वत साध्य की सिद्धि कराने वाला है । इसीलिए कहा है ।

एक बार बन्दे जो कोई, ताहि नरक पशुगति नहिं होई।

बन्धुओं, यह सत्य है कि इस तीर्थराज के दर्शन भव्य जीवों को ही प्राप्त होते हैं, जो प्राणी भक्ति भाव से इस तीर्थराज के दर्शन कर लेता है उसका हृदय पवित्र हो जाता है । पवित्र हृदय में ही भगवान वास करते हैं और वह नरक पशु गति से छूट जाता है ।

आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण माताजी ने इस तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर जी की भक्ति भाव सहित 121 वन्दना कर इस स्त्री पर्याय को सार्थक कर अपना जीवन सफल कर लिया, वे निकट भव्य आत्मा हैं ।

क्षुल्लिका पारस भूषण (समाधिस्थ)

शाश्वत क्षेत्र श्री सम्मेदशिखर जी

अनन्तानन्त मुनिराजों एवं वर्तमान चौबीसों में से 20 तीर्थंकरों की निर्वाणस्थली सम्मेद शिखर की यह पुण्यधरा पुण्यवान लोगों को बरबस ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है और इस धरा की पावन गोद में आकर मानों कि कोई भी जीव इसे छोड़ना नहीं चाहता और छोड़ना भी कौन चाहेगा क्योंकि यह सिद्ध भूमि है यह, मात्र आभासीक सु:ख में ही कारणभूत नहीं है। यह भूमि तो अनन्त सुख की दातार है या प्राप्त कराने वाली है, ऐसी पावन भूमि का महात्म्य जिसे मात्र शब्दों की श्रृंखला में निबद्ध करके वर्णित नहीं किया जा सकता इस तीर्थराज सम्मेद शिखर की पूज्य माताजी ने 121 वंदनायें की हैं, इन 121 वंदनाओं को माताजी ने वर्ष 2002 के चातुर्मास के दौरान लगातार किया है। इस चातुर्मास के दौरान पूज्य माताजी की कलम से "आरती ही सारथी, और सम्मेद शिखर चालीसा, आरती संग्रह एवं सम्मेद शिखर टौंक पूजन, नामक कृतियों की रचना हुई एवं माताजी की काव्य संकल्पना इतनी तीव्र है कि जहाँ पर भी प्रवास होता है वहीं पर कोई न कोई रचना जन्म लेती है और सम्मेद-शिखर के जैसा मौसम जहाँ की वादियाँ मानो कि जो यहाँ पर एक बार आये वह यहीं का होकर रह जाता है और फिर पूज्य माताजी का तो कहना ही क्या? जब माताजी की उम्र मात्र 3 वर्ष ही थी तब पहली बार आप सम्मेद शिखर की वंदना करने यहाँ पर आई हुई थीं तो मानो ऐसे पहाड़ चढ़तीं जा रहीं थी कि जैसे आपका पूरा देखा जाना हो। इससे पहले भी कई बार यहाँ पर इनका आना जाना हुआ हो। कहते हैं कि जो भी भव्य जीव इस तीर्थराज की एक बार भी भावों से वंदना कर ले उन भव्य जीवों को करोड़ों करोड़ों उपवासों के फल के बराबर पुण्य की प्राप्ति होती है और अधिक से अधिक 49 भवों के पश्चात वह जीव निश्चित ही मुक्तिरमा का वरण करके संसार के बंधनों से मुक्त होते हैं।

इस तीर्थराज पर चातुर्मास के दौरान मोक्ष सप्तमी के अवसर पर 24 घण्टे तक श्री पार्श्वनाथ स्त्रोत का अखण्ड पाठ भी किया गया था एवं यह विधान भी इसी चातुर्मास के दौरान ही रचा गया था। भक्ति में इतनी शक्ति होती है कि जहाँ ज्वार के दाने भी मोती के पुञ्ज का रूप धारण कर लेते हैं। फिर पूज्य माताजी का तो सम्मेद शिखर से इतना लगाव है कि यहाँ पर चातुर्मास करने के लिए मात्र 25 दिनों में 980 किलोमीटर का विहार किया था!

तीनों कालों में यह भूमि निश्चित निज ज्ञान कराती है जो भाव सहित वंदना करता शुभ आनन्द को बरसाती है। ऐसी सहज सुगम पंक्तियाँ पूज्य माताजी की लेखनी से उद्धृत हुई है।

करुणा सागर करुणा कीजे, शुद्ध आत्मा का वर दीजे।
हम भक्तों की है प्रभु आशा, शिवपुर में हो मेरा वासा।।
स्वामी हैं हम दास तिहारे, इन नयनों से तुम्हें निहारें।
स्वस्ति चाहे शरण में रहना, और नहीं कुछ तुमसे कहना।।

ऐसी भक्ति परक रचनाएं भक्त के मन को आत्म विभोर कर देती हैं और भक्त इतना तल्लीन हो जाता है भगवान की भक्ति में कि उसके कर्मों की निर्जरा स्वयमेव ही होने लगती है। भक्तगण ऐसी पूजन विधान की रचनाओं का अवलम्बन लेकर अपने कर्मों की निर्जरा करें और पूज्यनीय माताजी के त्याग तप को स्वयं में आचरित करने हेतु बारम्बार वन्दामि-वन्दामि-वन्दामि।

शालू दीदी
(संघस्थ)

प्रथम प्रयास - कितना खास

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी पर टेढ़ी-मेढ़ी पर्वतीय पगडण्डीयों पर अनेकों तीर्थ यात्री चढ़े जा रहे थे तभी उन्होंने देखा कि लगभग तीन वर्षीय एक बालिका बार-बार माता-पिता की अंगुली छोड़ तेजी से उत्साह के साथ पर्वत पर बढ़ती जा रही है। माता पुकारती-गुड़िया धीरे चलो, गिर जाओगी। बालिका मुस्कराकर माँ की ओर देखती और फिर से आगे चलने लगती मानों वह मार्ग उसका चिर परिचित हो। गोदी लेकर चलने वाला भैय्या (भील) भी मिन्नते करता रहा ''गोदी में आ जाओ'', पर कहां? बालिका को किसकी फिक्र थी। अन्तत: श्री पार्श्वनाथ की टौंक पर सभी सीढ़ियों को दौड़ कर पूरी करते हुऐ बालिका ने टौंक पर पहुँच कर पीछे देखा मानों कह रही हो देखो! मैं ही सबसे पहले पहुँची हूँ।

लेकिन किसे मालूम था कि उस दिन की वह नन्हीं बालिका संसारी भोगों को त्याग, पार्श्वनाथ की अनुगामी बन बाल तपस्विनी आर्यिका स्वस्ति भूषण के रूप में वर्ष 2002 में इसी पर्वतराज के आंचल में अपना सातवां चातुर्मास करेंगी। भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति से ओतप्रोत माता श्री ने यहीं पर श्री सम्मेद शिखर टौंक पूजन ''श्री सम्मेद शिखर चालीसा'' व ''आरती ही सारथी'' के साथ ''आरती संग्रह'' की रचनाऐं की जिसमें चौबीसों तीर्थंकरों भी आरतियाँ थी। ये सभी आरतियाँ मात्र 24 घण्टों मे ंही लिखी गई थी। ये भक्ति भाव व लेखन की कला तो माता में जन्मजात थी बस यहाँ सुअवसर व शुद्ध वातावरण मिला और माता श्री की लेखन कला पुस्तकों में उतर आई।

प.पू.माता श्री को पर्वतराज की 108 वंदना करने का भाव बहुत पहले से था और अब जबकि माता यहां पर विराजमान थी तो माता श्री ने अपनी मनोभावना की पूर्ति हेतु शिखर वन्दना प्रारम्भ की तो 108 के स्थान पर 121 वन्दनाऐं की, वो भी लगातार। जो कि एक रिकार्ड बन गया। माता ने श्री

पार्श्वनाथ गुफा में पार्श्वनाथ स्तोत्र का 24 घण्टे का अखण्ड पाठ किया। क्षेत्र पर चहुँमुखी धर्म प्रभावना करते हुऐ माता श्री का चातुर्मास पूर्ण हुआ। चातुर्मास काल में माता जी के हृदय में भाव जगा कि टौंक पूजन में प्रत्येक टौंक के अर्घ्य मंत्र लिखे जा चुके हैं। आरती, चालीसा सभी लिखे जा चुके हैं फिर क्यों न श्री सम्मेद शिखर विधान भी लिखा जाये। कुछ भक्तों ने भी माता श्री से निवेदन किया कि माता जी यदि यह विधान पुस्तक भी हमें मिलेगी तो एक नई विधा से श्री शिखर जी की भक्ति पूजा करने को मिलेगी और बस माता श्री ने जो विधान लिखना शुरू किया, वहीं पर पूर्ण करके मानो विधान लेखन का मार्ग ही प्रशस्त हो गया। शाश्वत तीर्थ, तीर्थ राज श्री सम्मेद शिखर पर श्री सम्मेद शिखर विधान की रचना रूपी नीव पर माता श्री ने एक-एक करके अनेकों छोटे बड़े विधानों की रचना कर डाली। लगभग 46 विधान माता श्री द्वारा रचे जा चुके हैं। भक्त समाज मुरार, ग्वालियर वालों ने माता श्री को ''विधान वाली मैय्या'' से अलंकृत कर अपनी विनयान्जलिं दी है। माता श्री के लेखन की सादगी, सरलता, भावपूर्ण व संगीतमय रचनाऐं निरन्तर भक्तों को लुभाती हैं। साधक माता जी की प्रत्येक कृति का इन्तजार करते हैं।

जिस प्रकार तीर्थराज की भाव पूर्ण वन्दना मुक्ति पथ प्रदायक है उसी प्रकार माता श्री द्वारा रचित प्रथम विधान ''श्री सम्मेद शिखर विधान'' भी भक्ति की धार में भक्तों को बहाने में समर्थ है। सभी विधानों और कृतियों में माता श्री के त्याग, तप, आचरण व आशीर्वाद की झलक पाठकों को मिलती है और मिलती रहेगी।

माता श्री के चरणों मे वन्दामि, वन्दामि, वन्दामि

निवेदक:
स्वराज कुमार जैन (अध्यक्ष)
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि0)

विनय पाठ

विनय पाठ पढ़कर करूँ, पूजा का आरम्भ ।
पंच परम परमेष्ठी को, वंदन का प्रारम्भ ।।

चार कर्म को नष्ट कर, बने आप अरिहंत ।
संकट हर मंगल करो, मिले मुक्ति का पंथ ।।

सिद्ध शुद्ध परमात्मा, सिद्धालय में वास ।
कार्य सिद्ध होवें मेरे, यही प्रभु से आस ।।

आचारज उवज्झाय गुरु, सर्व साधु मुनिराज।
ज्ञान ध्यान तप में रहें, नमता सकल समाज ।।

चौबीसों जिनराज के, चरण कमल को ध्यायें ।
जिनवाणी वरदान दे, शत्-शत् शीश झुकायें ।।

मंगल मय जिन धर्म है, मंगल मय जिन ज्ञान ।
मंगल सम्यग्दर्श को, बारम्बार प्रणाम ।।

सौ इन्द्रों से पूज्य हो, तीन लोक के नाथ ।
कर्म बंध काटो प्रभु, दे दो अपना साथ ।।

जगत सिन्धु में डूबते, दे दो सहारा नाथ ।
मात पिता बंधु तुम्हीं, तुम्ही हमारे भ्रात ।।

पद पंकज जो पूजता, सकल विघ्न नश जाय ।
सच्ची भक्ति कर रहे, सच्चा पथ मिल जाय ।।

चिंता तज चिंतन तेरा, करने आया द्वार ।
गुण गाकर भक्ति करूँ, दो मुझको आधार ।।

स्वारथ के संसार में, मैं हूँ अकेला देव ।
छोड़ जगत अब आ गया, करूँ आपकी सेव ।।

गणधर ने गुण गाये थे, पूरे कह ना पाये ।
मैं अज्ञानी क्या कहूँ, चरणन शीश झुकाये ।।

दया दृष्टि मुझ पर करो, दुखिया पर हे नाथ ।
नहीं घटेगा आपका, मुझे मिले सुख पाथ ।।

व्यथा कहूँ किससे प्रभो, कोई न रिश्तेदार ।
लगन लगी अब आपमें, दो जीवन का सार ।।

गतियों में मैं घूमता, किया न कुछ भी काम ।
जय जिनवर जिनदेव जी, मिला आपका धाम ।।

वीतराग प्रभु मिल गये, छोड़े रागी देव ।
वीतरागता पाऊँगा, करूँ आत्म की सेव ।।

आकुलता अब छोड़ दी, समता रस परिणाम ।
'स्वस्ति' बस वंदना करे, मिले मोक्ष का धाम ।।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चतारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोअर्हते स्वाहा पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मंगल विधान

दोहा

हो अपावन तन यदि, या करते कोई काम ।
परमेष्ठी के ध्यान से, होवे पाप की हान ।।

अपराजित यह मंत्र तो, करे विघ्न का नाश ।
सब मंगल में प्रथम है, देवे मुक्ति वास ।।

अर्हं शब्द को नमन है, परमेष्ठी का ध्यान ।
सिद्ध चक्र का बीज है, बारम्बार प्रणाम ।।

विघ्न प्रलय सब शान्त हो, भूत प्रेत भग जायें ।
विष निर्विष होवे तुरत, जो पूजा को गायें ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ ।
शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, कल्याण को अर्घ्य चढ़ाता हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतोगर्भजन्मतपज्ञान निर्वाण पंच-कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। 1।।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ ।
शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, परमेष्ठी को अर्घ्य चढ़ाता हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। 2।।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ ।
शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, जिननाम को अर्घ्य चढ़ाता हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। 3।।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूप फल लाता हूँ ।

शुभ मंगल गान करूँ जिनगृह, जिनसूत्र को अर्घ्य चढ़ाता हूँ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। 4।।

स्वस्ति पाठ

चौपाई

श्री जिनेन्द्र की करें वंदना, तीन लोक के ईश हैं झुकना ।
स्याद्वाद जिन धर्म के नायक, हो कल्याण तुम्हीं सब लायक ॥

हो त्रिलोकगुरु जिनपुँगव हो, महिमाशाली निज स्थित हो ।
आत्मज्योति अद्‌भुत प्रसन्न हो, हो कल्याण मैं भी धन्य हूँ ॥

विमल हो निर्मल ज्ञानी अमृत, पर भावों को करते विस्मृत ।
सब वस्तु के आप हो ज्ञायक, हो कल्याण आप हो नायक ॥

द्रव्य शुद्धि भावों की शुद्धि, अवलंबन पूजा की वृद्धि ।
यह शुभ यज्ञ करूँ मैं प्रारम्भ, हो कल्याण सुखों का आरंभ ॥

महापुरुष पावन की गुरुता, मैं अल्पज्ञ हूँ मेरी लघुता ।
मन में केवल ज्योति जगाऊँ, शुभ भावों से शीश झुकाऊँ ॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिन प्रतिमाग्रे परि: पुष्पाजंलिं क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल

ऋषभ अजित संभव जिन स्वस्ति, अभिनंदन स्वस्ति-स्वस्ति ।
सुमति पदम सुपारस जिनवर, चन्द्रप्रभू स्वस्ति-स्वस्ति ॥

पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य स्वस्ति-स्वस्ति ।
विमल अनंत धर्म शांति जिन, कुंथु अर स्वस्ति-स्वस्ति ॥

मल्लि मुनि नमि नेमि पार्श्व जिन, महावीरा स्वस्ति-स्वस्ति ।
स्वस्ति-स्वस्ति चिंतन में हो, निशदिन हो स्वस्ति-स्वस्ति ॥

इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

शंभू छंद

केवल ज्ञान मनः पर्यय औ, अवधि ज्ञान बुद्धि ऋद्धि ।
कोष्ठ बीज संभिन्न श्रोतृपद, दूर स्पर्श श्रवण ऋद्धि ॥
दूरास्वादन घ्राण विलोकन, प्रज्ञा प्रत्येक पूर्वी ऋद्धि ।
चतुर्दश पूर्वी प्रवादि अष्टांग, जंघा वन्हि श्रेणी ऋद्धि ॥

फल जल तंतु पुष्प बीजांकुर, गगन गमन धारी ऋद्धि ।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, मन वच काया है ऋद्धि ॥
काम रूप वशित्व ईशत्व है, है प्राकाम्य अंतर ऋद्धि ।
आप्ति प्रतिघात दीप्त तप्त तप, महाउग्र तप घोर ऋद्धि ॥

घोर पराक्रम परम घोर तप, ब्रह्मचर्य आमर्ष ऋद्धि ।
सर्वौषध आशीर्विष दृष्टि, दृष्टि अविष है क्ष्वेल ऋद्धि ॥
विडौषध जल मल क्षीरस्त्रावी, घृतमधु अमृत है ऋद्धि ।
है अक्षीण संवास महानस, होती है शुभ ये ऋद्धि ॥

मुनिवर जब तप करते रहते, ये तो स्वयं ही आती हैं ।
चमत्कार नहिं अतिशय है ये, भक्त के मन को भाती हैं ॥
ऐसे परम ऋषिवर मेरे, हम सब का कल्याण करें ।
संकट दुःख पीड़ायें हर कर, कर्म हमारे शीघ्र हरें ॥

ऋद्धि सिद्धि के स्वामी ऋषिवर, ऋद्धि सिद्धि भंडार भरें ।
ऋषिवर चरणों नमन करें हम, सुख अमृत के पुष्प झरें ॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल-विधानं परिपुष्पांजलिं क्षिपामि।

देवशास्त्र गुरू पूजा

स्थापना

शंभु छन्द

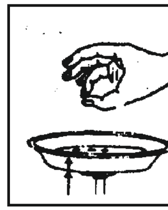

रवि केवल ज्ञान का चमक रहा, जिनके अंतर हृदय स्थल में।
तत्त्वों का ज्ञान करा करके, पहुँचा देती जो शिवपुर में ।
दुर्गम संयम पथ पर चलकर, निज आत्म ध्यान में लीन रहे,
श्री देव शास्त्र गुरू के चरणों में, हरपल मेरा ध्यान रहे ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह! अत्र अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

जग के कीचड़ में फँस कर के, जीवन को वृथा गंवा डाला।
जिनवर की वाणी ना मानी, मिथ्या को मैंने था पाला ॥
अमृत जल लेकर आया हूँ, यह जन्म मरण तुम दूर करो ।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाषीश मम शीश धरो ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग की चिंता ने हे प्रभुवर, जीवन को चिता बना डाला ।
हर पल हर क्षण मैं जलता हूँ, हृदय में उठती है ज्वाला ॥
शीतल चंदन लेकर आया, मम भवाताप तुम दूर करो ।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाषीश मम शीश धरो ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

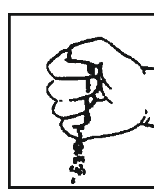

आयु घटती रहती पल पल, फिर श्वांसो की टूटी माला ।
स्थिरता निज में न पाई, समता को मैंने था टाला ॥
अक्षयपुर का मैं वासी बनूँ, भव व्याधि नाथ तुम दूर करो ।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाषीश मम शीश धरो ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन की निर्मलता नष्ट हुई, और काम भाव में उलझ गया ।
कभी आतम ध्यान नहीं भाया, संसार चक्र में झुलस गया ।।
मैं स्वर्ण पुष्प लेकर आया, तुम सम मुझमें वह शक्ति भरो ।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाषीश मम शीश धरो ।।

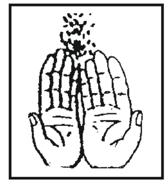

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीवन में भोजन बहुत किया, पर भूख न मेरी शान्त हुई ।
जिव्हा लोलुपता के कारण, जीवन चर्या दुर्भान्ति भई ।।
तेरे चरणों में आया हूँ, यह भवाताप तुम दूर करो ।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाशीष मम शीश धरो ।।

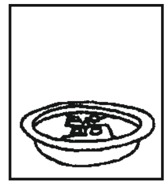

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह ज्ञान दीप हो गया मद्धिम, अज्ञान अंधेरा छाया है ।
तेरा मेरा करता रहता, पर हाथ नहीं कुछ आया है ।।
प्रभु ज्ञान दीप की ज्योति से, मम अंधकार तुम दूर करो ।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाषीश मम शीश धरो ।।

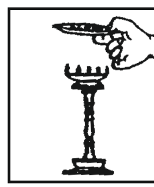

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये कर्म बहुत दुःख देते हैं, ये बात मैं सोचा करता था ।
पर खोटे कर्मों के द्वारा, पापों की गठरी भरता था ।।
ये धूप समर्पित करता हूँ, मम कर्मों को तुम ध्वंस करो ।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाषीश मम शीश धरो ।।

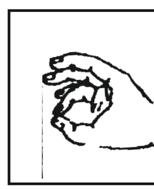

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मैं पुण्य पाप का फल पाता, और राग द्वेष में पड़ा रहा ।
सुख दुःख को साथी बना लिया, संसार चक्र में अड़ा रहा ।।
मैं चर्तुगति में भटक रहा, फल मोक्ष गति तुम शीघ्र करो ।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाषीश मम शीश धरो ।।

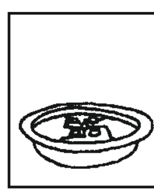

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मों के घोर अंधेरे से, घबरा कर चरणों में आया ।
अज्ञान मिटा दो हे प्रभुवर, नहीं और कहीं तुम-सा पाया ।।
भूले-भटके भ्रमते जग को, आलोक दिखा तम दूर करो ।
हे करूणाधारी देवागम गुरू, शुभाषीश मम शीश धरो ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा

देव शास्त्र गुरू गुणन को, धरूँ हृदय में धार ।
श्रद्धा भक्ति भाव से, नमन करूँ शतबार ।।

अरिहंत देव हैं महादेव, इनके चरणन की करें सेव ।
चहुँ कर्म घातिया किये चूर, सुख दर्श ज्ञान से हुये पूर ।।
छ्यालीस मूलगुण धारी हो, भव्यों के तुम उपकारी हो ।
चरणों तल सुर पंकज रचाये, जय जय की ध्वनि से नभ गुंजाये।।
नर देव पशु चरणों में आये, तुम वाणी सुनकर शीश नाये ।
सब बैर व्याधि क्षण में नशाये, यह चमत्कार चरणों में पाय ।।
शीतल वायु और पुष्प वृष्टि, शुभ-शुभ होती जहाँ आप दृष्टि ।
बतलाते हैं तत्त्वों का सार, भव्यों की नैया करें पार ।।
जग में तुम महिमा है महान, हम करते हैं शत्-शत् प्रणाम ।
मेरा भी पुण्योदय आया, तुम पूजन कर मन हर्षाया ।।
प्रभु के मुख से हुई ओंकार, वह द्वादशांग का बना सार ।
कहलायी वह माँ जिनवाणी, भव्यों की है वह कल्याणी ।।
निर्ग्रन्थ वेश के धारे हैं, वे गुरूवर हमको प्यारे हैं ।।
वे पंच महाव्रत धारी है, भय क्रोध कुटिलता हारी हैं ।
करे मोक्षपुरी की तैयारी, उन्हें मुक्ति सुन्दरी है प्यारी ।।
रहे ज्ञान ध्यान में लीन सदा, नहीं अशुभ कर्म करते कदा ।

ऐसे मुनिवर के दर्श पाये, चरणों में शत्-शत् शीश नाये ।।
'स्वस्ति' करे चरणों की भक्ति, शीघ्राति शीघ्र मिल जाये मुक्ति ।

दोहा

वर्णन की नहिं शक्ति है, गुण हैं अपरंपार ।
श्रद्धा भक्ति भाव से, हो जाये भव पार ।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह जयमाला पूर्णार्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

जिनशासन जिनदेव औ, जिन गुरू शीश नवाय ।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुन्दरी पाय ।।

इत्याशीर्वाद

श्री सम्मेद शिखर विधान प्रारम्भ

(पूजन)

स्थापना

(तर्ज : अनादि काल से.............)

है परम पूज्य निर्वाण भूमि, कण-कण मय जिसका पावन है।
वंदन अर्चन पूजन करते, जीवन में होता सावन है ।।
भू शाश्वत अक्षय अविनाशी, तीर्थंकर मोक्ष को जायेंगे ।
जन भूत भविष्यत वर्तमान के, श्रद्धा से गुण गायेंगे ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रात् असंख्यात सिद्धः अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रात् असंख्यात सिद्धः अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर क्षेत्रात् असंख्यात सिद्धः अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं

जल की निर्मलता को लखकर, प्रभु ध्यान यही मुझको आया ।
आत्मा निर्मल हो जाये मेरी, जल चरणों में लेकर आया ।
सम्मेद शिखर निर्वाण भूमि को, शत्-शत् वंदन करता हूँ ।
हो सम्यक दर्शन प्राप्त मुझे, शुभ भाव चरण में धरता हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु
विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शीतल चंदन तन शांत करे, भव-भव का ताप मैं सहता हूँ ।
हो नष्ट कर्म का ताप मेरा, चंदन से वंदन करता हूँ ।।
सम्मेद शिखर........

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर क्षेत्रेभ्यो, संसार ताप विनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षय स्वभाव है आत्मा का, अविनाशी अजर अमर निजपद।
अंजाना बन जग में रहता, मैं भूल गया हूँ निज का पद ।।
सम्मेद शिखर........

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो, अक्षय पद प्राप्ताय
अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की गंध सुगंधी के, पीछे जग दौड़ा फिरता है ।
जब काम भाव हो नष्ट प्रभु, आतम चिर शांति पाता है ।।
सम्मेद शिखर........

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो, कामबाण विध्वंसनाय
पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भाव भोज और द्रव्य भोज, दिन रात मैं करता रहता हूँ ।
है आतम को यह बीमारी, मैं सोच समझ न पाता हूँ ।।
सम्मेद शिखर........

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो, क्षुधा रोग विनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिकता का मैं ज्ञान करूँ, पर अध्यातम का ध्यान नहीं ।
निज आतम को भूला बैठा, चिर शांति नहीं मिल पायी कहीं।।
सम्मेद शिखर.......

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय के कारण मैं, सुख-दुख का अनुभव करता हूँ ।
हो कर्म रहित मेरी आत्मा, यह धूप वन्हि में खेता हूँ ।।
सम्मेद शिखर.......

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

निशदिन है फल की चाह मुझे, पर मुक्ति फल न प्राप्त किया।
इक बार ध्यान में रस आये, भव भटकन से बच जाये जिया ।।
सम्मेद शिखर.......

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये भाव द्रव्य और द्रव्य भाव, मैं अर्घ्य सजाकर लाया हूँ ।
है प्रभु मुझको आशा तुमसे, मैं भाव शुद्ध कर लाया हूँ ।।
सम्मेद शिखर.......

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

शंभू छंद

(तर्ज : भला किसी का....)

जिस भूमि से प्रभु मोक्ष गये, निर्वाण भूमि कहलाती है ।
अतिशय कारी निर्वाण भूमि, वह महातीर्थ बन जाती है ।।
है जीव अनंतों मोक्ष गये, निज आत्म तत्व को प्राप्त किया ।
मैं वंदन शत्-शत् बार करूं, शुभ निजानंद का स्वाद लिया ।।

तीनों कालों के तीर्थंकर, इस सिद्ध क्षेत्र पर आयेंगे ।
कर्मों को करके नष्ट भ्रष्ट, फिर मुक्ति पुरी को जायेंगे ।।
संग उनके मुनि अनंतानंत, अपनी सिद्धि प्रगटायेंगे ।
पा सिद्ध शुद्ध चिर आतम को, निज आत्म गुणों को गायेंगे ।।
स्वर्गों से सुरगण आते हैं, निर्वाण भूमि वंदन करने ।
मस्तक पर रज धारण करते, है मुक्ति रमा पति को बनने ।।
जो भाव सहित वंदन करता, संसार चक्र से छूटेगा ।
दु:खों के सागर से तिरकर, बंधन फिर उसका टूटेगा ।।
श्रद्धा भक्ति अर्चन वंदन, है सर्व समर्पित भूमि को ।
सिद्धों से कण कण पूज्य हुआ, शत् बार नमन इस भूमि को ।।
श्री आदिनाथ जी आदि में, जा बैठे थे कैलाश गिरि ।
आतम परमातम ध्या करके, थी पास बुलाई मुक्ति श्री ।।
राजुल को तजकर नेमिनाथ, गिरनार गिरि में जा पहुंचे ।
निज आतम से प्रीति करके, वन में बैठे आंखें मीचे ।।
पंच कल्याणक चंपापुर में, श्री वासुपूज्य न गये कहीं ।
ध्याता बन ध्यान लगा लीना, फिर मुक्ति सुंदरी आई वहीं ।।
कुंडलपुर में था जन्म लिया, श्री वर्द्धमान फिर नाम रखा ।
है पद्म सरोवर बीच प्रभु, आत्मानंद का था स्वाद चखा ।।
तीर्थंकर केवल ज्ञान प्राप्त कर, आये थे सम्मेद गिरि ।
कुछ पुण्य महाभूमि का है, जिसने परिणायी मुक्ति श्री ।।
है शाश्वत अक्षय अविनाशी, यह भूमि नष्ट न होती है ।
हो प्रलय काल का समय भले, स्वस्तिक चिन्हों संग रहती है।।
तीनों कालों में यह भूमि, निश्चित निज ज्ञान कराती है ।
जो भाव सहित वंदन करता, शुभ आनंद को बरसाती है ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय
जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पूजन कर सम्मेद की, हर्षित हुआ मैं आज ।
बार-बार वंदन करूँ, हो समृद्ध समाज ।।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि भी, होती उनके पास ।
जिनने ध्याया सिद्धों को, किया मुक्तिपुर वास ।।
पावन परम इस धाम को, शत् शत् करूँ प्रणाम ।
सब बंधन से छूटकर, 'स्वस्ति' पाये शिवधाम ।।

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिं क्षिपामि

अर्घ्यावली

24 तीर्थंकरों के गणधरों की कूट

चौबीसों जिनराज प्रभु जी, ऋद्धि सिद्धि भर देते हैं ।
उनके गणनायक को बंदू, मोह तिमिर जो हरते हैं ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।

चौबीसों जिनराज के, गणधर शीश झुकायें ।
उनका भी आशीष लें, भवसागर तर जायें ।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम के उद्यान के भिन्न-2 स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(1)

श्री कुन्थुनाथ जी (ज्ञानधर कूट)

संपूर्ण गुणों को धारण कर, वन में जाकर दीक्षा लीनी ।
फिर ध्यान अग्नि को सुलगाकर, सब कर्म नाश क्रिया कीनी ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

चक्रवर्ती कमनीय तन, तीर्थंकर भगवान ।
तीन तीन पद धार कर, शिवपुर किया प्रयाण ॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा । (2)

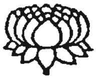

श्री नमिनाथ जी (मित्रधर कूट)

नमन करूं सौ बार चरण में, नमिनाथ जिन मुक्त हुये ।
इसी कूट से कर्म नाशकर, क्षणभर में जो सिद्ध हुये ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

तेरह विध चारित्रधर, किये घातिया घात ।
मुक्ति से नहीं दूरी थी, मिली हाथ की हाथ ॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा । (3)

श्री अरहनाथ जी (नाटक कूट)

जग के रिश्ते सब नाटक है, अर एक तुम्ही सच्ची शरणा ।
पावन भूमि पावन माटी, तन धन जीवन अर्पण करना ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

अर जिन अरि को नाश कर, आप हुए जगजीत ।
तीन तीन पदवी महा, नही करी थी प्रीत ॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(4)

श्री मल्लिनाथ जी (संवल कूट)

संसार समुन्दर है गहरा, न छोर नजर मुझको आता ।
अवलम्बन हो चरणो का मुझे, कुछ और नहीं तुमसे आशा।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

कर्म मल्ल पछाड़कर, मल्लिनाथ कहलाय ।
केवल ज्ञान तभी लिया, मुक्ति सुन्दरी पाये ।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 करोड़ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(5)

श्री श्रेयांसनाथ जी (संकुल कूट)

द्रग ज्ञान श्रेष्ठ चारित्र श्रेष्ठ, हो श्रेष्ठ तुम्ही जग के ज्ञाता ।
छोड़े जग के सारे झंझट, न रहा कोई कुछ भी नाता ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

सम्पूर्ण जगत में श्रेष्ठ हैं, श्रेयांस नाथ भगवान ।
श्री सम्मेद पे आय के, पाया शिवपुर धाम ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(6)

श्री पुष्पदंत जी (सुप्रभ कूट)

पुष्पों से भी बढ़कर सुंदर, हे प्रभु जी रूप तुम्हारा है ।
निज भेद ज्ञान के द्वारा ही, आतम का रूप निहारा है ।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

दन्त हुए हैं पुष्प सम, पुष्पदंत कहलाये ।
निज आतम को ध्याय कर, मुक्ति सुन्दरी पाये।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि मुनि 1 कोड़ा कोड़ी 99 लाख 7 हजार 480 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(7)

श्री पद्मप्रभ जी (मोहन कूट)

निज ने ही निज का रूप लखा, पर दर्पण से नहि काम लिया।
सब कर्म कालिमा छूट गई, निज आतम में विश्राम किया ।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

पदम प्रभू शुभ देव है, देख हृदय खिल जाये ।
दर्शन जो इनके करे, मुक्ति सुंदरी पाये ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रादि मुनि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 790 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(8)

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी (निरजर कूट)

मुनिनाथ सुव्रत व्रत देते है, कर्मो का नाश हो जायेगा ।
लेकर दीक्षा कर कर्म दहन, वह मुक्ति रमा को पायेगा ।

हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

मुनि सुव्रत व्रत धारकर, किये कर्म की हान ।
तप अग्नि जारी वहां, शत्-शत् करूँ प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्रादि मुनि 99 कोड़ा कोड़ी 9 करोड़ 99 लाख 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(9)

श्री चन्द्रप्रभ जी (ललितकूट)

हे चन्द्रकांति सम चंद्रनाथ, अतिशय को तुम बरसाते हो ।
प्रभु ललित कूट से मोक्ष गये, सब भक्त जनो को भाते हो ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

उज्जवल वर्ण है चन्द्र सम, उज्जवलता को देय।
अर्द्धचन्द्र का चिन्ह है, अन्धकार हर लेय ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रादि मुनि 984 अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 595 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(10)

श्री आदिनाथ भगवान की टोंक

सृष्टि में स्वस्ति के कर्त्ता, तुम प्रजापति बनकर आये ।
जा बैठे थे कैलाश गिरि, वहां मुक्तिरमा को परिणाये ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

आदिनाथ की भक्ति से, होता है कल्याण ।
स्वार्थ न हो यदि भक्ति में, मिल जाते भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से मोक्ष गये तिनके चरणाविन्द को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्तिभाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(11)

श्री शीतलनाथ जी (विद्युतवर कूट)

है यथा नाम है तथा काम, शीतल जल से भी शीतल हैं ।
संसार ताप को दूर करें, धोते सब कर्मों का मल हैं ॥
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ॥

चन्दन सम शीतल करें, शीतलता को देय ।
शीतल प्रभु पूजा करो, अवगुण सब हर लेय ॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 18 कोड़ा कोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(12)

श्री अनन्तनाथ जी (स्वयंप्रभ कूट)

तुम अनंतचतुष्टय को धरकर, निज केवल ज्ञान जगाया है ।
फिर कूट स्वयंभू में आकर, श्री मुक्तिरमा को पाया है ॥
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ॥

अन्त नहीं संसार का, पाप करे जो कोय ।
अनन्त प्रभु के दर्श से, पाप कर्म को खोये ।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 96 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो। जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा। (13)

श्री संभव नाथ जी (धवल कूट)

कर अष्ट कर्म को चूर प्रभो, मुक्ति में डाला है डेरा ।
मैं शरण तिहारी आया हूँ, मिट जाये जनम मरण का फेरा ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

सम्भव तो सम भव करे, शक्ति ज्ञान की पाये ।
तीजे तीर्थंकर बने, घोडा चिन्ह बताये ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 12 लाख 42 हजार 500 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा। (14)

श्री वासुपूज्य जी की टोंक

तज काम क्रोध औ लोभ मोह को, तजकर के वासुपूज्य बने ।
पृथ्वीतल के आभूषण हो, तुम दुष्ट कर्म को शीघ्र हने ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

पूज्य बने वासुपूज्य जी, तप कीना घनघोर ।
चंपापुर वह क्षेत्र है, रत्न झरे चहुं ओर ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि चम्पापुर मंदारगिरि से एक हजार मुनि सिद्ध हुए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्तिभाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा। (15)

श्री अभिनंदन जी (आनंद कूट)

अभिनन्दन तुम जग के नंदन, आनंद प्रद तुम तीर्थंकर हो ।
है प्राप्त किया पूर्णानंद को, शान्ति देने से शंकर हो ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

नन्दन अभिनन्दन बने, नंदित करे जग मांहि ।
चौथे तीर्थंकर बने, वानर चिन्ह बताहि ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन नाथ जिनेन्द्रादि मुनि 72 कोड़ा कोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(16)

श्री धर्मनाथ जी (सुदत्तवर कूट)

है धर्म आत्मा का भूषण, सच्चा गहना कहलाता है ।
इसको धारण जो भी करता, वह मोक्षपुरी को जाता है ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

धर्म-धर्म है बांटते, ले लो दिल को खोल ।
प्रेम करो तुम धर्म से, बोलो मीठे बोल ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 29 कोड़ा कोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 765 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(17)

श्री सुमतिनाथ जी (अविचल कूट)

सुमति–सुमति को दे करके, मन भाव शुद्ध कर देते हैं ।
शुभ त्याग तपस्या पथ दिखला, मुक्ति का वर दे देते हैं ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

सुमति–सुमति के दाता हैं, हरें बुद्धि का रोग ।
सम्यक ज्ञान को देयकर, सबको करें निरोग ।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 1 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 781 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा । (18)

श्री शान्तिनाथ जी (कुन्दप्रभ कूट)

श्री शान्तिनाथ जिनराज प्रभु, निज आत्म शांति को पाया है ।
तुम सिन्धु हो बिन्दु दे दो, निज शांति सिन्धु लहराया है ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

शांति जग में ना मिले, मिले शांति के द्वार ।
शान्ति मय जीवन करो, विनती बारंबार ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ा कोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा । (19)

श्री महावीर स्वामी जी की टोंक

है विपुल ज्ञान की राशि तुम, तत्वों का सार बताया है ।
कर नीर क्षीर सम कर्म वीर, शुभ धर्म अहिंसा गाया है ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

धीर वीर महावीर हैं, सन्मति सम्यक ज्ञान ।
अतिवीर वर्द्धमान का, धरूँ हृदय में ध्यान ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पदम सरोवर स्थान से 26 मुनि सहित मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वचन, काय से अत्यंत भक्तिभाव से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(20)

श्री सुपार्श्वनाथ जी (प्रभास कूट)

सुज्ञान सुध्यान सुपारस का, जग में उजियाला छाया है ।
तुम चरणों में प्रभु आकर के, गद्-गद् हो मन हर्षाया है ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।

नाम सुपारस है प्रभो, कुन्द समान बताये ।
खोट पे चोट को मारकर, स्वस्ति दिया बनाये ।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 49 कोड़ा कोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(21)

श्री विमलनाथ जी (सुवीर कूट)

है विमल नाथ के निर्मल पद, जो भवाताप को दूर करे ।
हम चले आपके पदचिन्हों, फिर रत्नात्रय सिरमौर धरे ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

विमल वंदना नित करूँ, करूँ तुम्हारा ध्यान ।
भक्तों के संकट हरो, बारंबार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 70 कोड़ा कोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(22)

श्री अजितनाथ जी (सिद्धवर कूट)

तुम पार हुये थे भवसागर, है मेरी नौका सागर में ।
तुम दर्शन ज्ञान के धारी हो, भर दो कुछ मेरी गागर में ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

पावन हो गई आत्मा, पावन हुये हैं भाव ।
सुख संपत्ति शुभ ज्ञान हो, पार लगाओ नाव ॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि मुनि एक अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।(23)

श्री नेमिनाथ जी की टोंक

हे नेमिनाथ करूणा नंदन, करूणा की धारा बरसाओ ।
जग में भ्रमते हम जीवों को, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

ब्याह समय वैराग ले, किया आत्म का ध्यान ।
गिरनारी स्वामी बने, बारंबार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरूद्ध इत्यादि 72 करोड़ 700 मुनि गिरिनार पर्वत से मोक्ष गए तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा । (24)

श्री पार्श्वनाथ जी (स्वर्णभद्र कूट)

पारस के चरणों में आकर, पारस के रस को पाना है ।
सब चर्तुगति के दुख छूटे, फिर आना न फिर जाना है ।।
हम आये बाबा बड़ी दूर से, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

वामा के नंदन प्रभो, अश्वसेन के लाल ।
पूजा भावों से करें, कर दो हमें निहाल ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनि इस परमपुनीत कूट से मोक्ष गए तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारम्बार नमस्कार हो । जलादि अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा । (25)

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

शंभु छंद

हे महासेन के राज दुलारे, वामा के तुम नन्दन हो।
हम सबके संकटहारी हो, शीतलता में तुम चन्दन हो।।
जग की शोभा प्रभुवर तुमसे, पृथ्वी तल के आभूषण हो।
मन मन्दिर में तुम आ जाओ, भागेंगे जग के दूषण हो ।।

दोहा

ज्ञान की वर्षा करो, अज्ञानी पर नाथ ।
सेवक चरणों में पड़ा, चरणों में है नाथ ।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रे विराजित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रे विराजित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रे विराजित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

गंगा सागर का निर्मल जल, तन के मल को धो देता है ।
पर अंतर मन का कर्ममैल, शुभ रत्नात्रय ही धोता है ।।
हे पार्श्वनाथ भगवान मेरे, उपसर्ग सहन कर मोक्ष लिया ।
मुझको भी ऐसी शक्ति दो, भटके न भव-भव मेरा जिया ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

बावन चन्दन की शीतलता, मम देह ताप को दूर करे ।
अन्तर में क्रोधाग्नि जलती, न ईर्ष्या को वह दूर करे ।।
हे पार्श्वनाथ....

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव-भव में खरी तपस्या से, क्षयवत को अक्षय कर डाला ।
आशीष आपका हो प्रभुवर, पहनूँ मुक्ति की वरमाला ।।
हे पार्श्वनाथ भगवान मेरे, उपसर्ग सहन कर मोक्ष लिया ।
मुझको भी ऐसी शक्ति दो, भटके न भव-भव मेरा जिया ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

चहुँ ओर कामना का डेरा, सारी दुनिया पर छाया है ।
उसकी आशा में ही रहता, इससे ही जग भरमाया है ।।
हे पार्श्वनाथ.............

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नाना व्यंजन भक्षण करता, पर तृप्त नहीं यह मन होता ।
निशदिन यह पेट रहे खाली, इस चिन्ता में जीवन खोता।।
हे पार्श्वनाथ.............

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जितना-जितना शुभ ज्ञान बढ़े, उतना उतना संसार नशे ।
वरदान आपका हो प्रभुवर, हम सभी कर्म को शीघ्र नशें।।
हे पार्श्वनाथ.............

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्मोदय को कारण कहकर, नित करम बंध करता जाता ।
हो कर्म नष्ट मेरे प्रभु जी, ऐसा अवसर मैं कब पाता ।।
हे पार्श्वनाथ.............

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फलदाता फल को देता है, जग के फल तो सब निष्फल हैं।
उनमें ही मेरा ध्यान रहे, पर सच्चा फल मुक्ति फल है ।।
हे पार्श्वनाथ....

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये आठ द्रव्य और आठ कर्म, चरणों में प्रभुवर लाया हूँ ।
इक बार नजर कर दो मुझ पर, यह भाव संजोकर आया हूँ ।।
हे पार्श्वनाथ.............

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक अर्घ्य

दोहा

च्युत हो अच्युत स्वर्ग से, करने भव का ह्रास ।
मुक्ति रमा पाने प्रभु, गर्भ किया था वास ।।

गीता छन्द

भूलोक में चारों तरफ, गुणगान सब गाने लगे ।
आये प्रभु जब गर्भ में, जन-जन भी हर्षाने लगे ।।
आज्ञा करी सुर इन्द्र को, जा रत्न बरसाओ सभी ।
धन धान्य से पूरित करो, दारिद्र न होवे कहीं ।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण द्वितीयां गर्भ मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

लिया प्रभु ने जन्म है, माँ वामा की कोख ।
सुन्दर रूप अतुल्य बल, हर्षित हुआ था लोक ।।

सुर इन्द्र सब हर्षित हुए, घण्टे सभी बजने लगे ।
सुन दुन्दुभि और वाणी वीणा, भाव शुभ जगने लगे ।।
इन्द्र प्रभु को लेयकर, पाण्डुक शिला जाने लगे ।
ओ क्षीर जल अभिषेक कर, मन में वो हर्षाने लगे ।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

मोह कर्म को तोड़कर, छोड़ दिया परिवार ।
तेरह विध चारित्र धर, वन में किया विहार ॥

संसार में रहकर प्रभु, निज आत्मा में लीन हैं ।
ज्ञान मनः पर्यय लिया, शुभ ध्यान में तल्लीन हैं ॥
परमात्म ध्यान से तेज कान्ति, नित्य ही बढ़ने लगी ।
दर्शन करे जो भी प्रभु का, आत्मा जगने लगी ॥

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्याम् तपो मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

प्रतिमा प्रगटी आत्म की, हुआ था केवल ज्ञान ।
समवशरण रचना करें, सुरपति देव प्रधान ॥

स्वर्ग की लक्ष्मी उतर कर, चरणों में आने लगी ।
हो धन्य जीवन भी मेरा, प्रभु गीत को गाने लगी ॥
चहुँ घातिया को नष्ट कर, निज आत्म में रहते मगन ।
दिव्य ध्वनि सुनकर प्रभु, शुभ ज्ञान लेते भव्य जन ॥

ॐ ह्रीं चैत कृष्ण चतुर्थी दिवसे केवलज्ञान मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

अन्त किया है कर्म का, ऐसा किया था ध्यान ।
मुक्ति सुन्दरी के लिए, पाया पद निर्वाण ॥

निज ध्यान में ही लीन हो, प्रभु पूर्ण सुख पाने लगे ।
हम ध्यान प्रभु का नित करें, शुभ भाव हम भाने लगे ॥
शुभ तीर्थ तीर्थंकर सभी की, वन्दना हम नित करें ।
पद पायेंगे निर्वाण का, प्रभु प्रार्थना में चित्त धरें ॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष मंगल मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा

जन जन के हृदय बसे, पार्श्वनाथ भगवान ।
अपने सम कर लो मुझे, धरूँ आपका ध्यान ॥

अष्टक छन्द

हे पार्श्वनाथ भगवान मेरे, सुर नर चरणों में आते हैं ।
हम भाव भक्तिपूर्वक तेरे, सम्पूर्ण गुणों को गाते हैं ।।
तुम कामजयी तुम विश्वजयी, कर्मों पर भी जय पाई है ।
मुझको ऐसी शक्ति दे दो, अब आतम की सुधि आयी है ।।
पुद्गल शरीर यह नश्वर है, तुमने इसको पहचाना है ।
निज का स्वरूप पाने हेतु, बना शुक्ल ध्यान का बाना है ।।
ये राग द्वेष के परमाणु, प्रभुवर को न छू पाते हैं ।
हो मोह कर्म से दूर आप, शुभ ध्यान में गहरे जाते हैं ।।
जब ध्यान लीन थे तुम प्रभूवर, वह दुष्ट कमठ फिर आया है।
ओले-शोले पत्थर-पानी, कर अशुभ भाव बरसाया है ।।
हो शान्त भाव धर ध्यान लीन, तुमने न जरा प्रतिकार किया ।
पर आपकी तेज तपस्या ने, देवों का आसन हिला दिया ।।
आये पद्मावती धरणेन्द्र, उपसर्ग से रक्षा करने को ।
देवी ने आसन बना लिया, प्रभु को सर पर बैठाने को ।।
धरणेन्द्र ने छत्र बना करके, सर पर छाया फैलाई थी ।
उपसर्ग कमठ का नष्ट किया, दश दिशा में शान्ति छाई थी ।
शुभ त्याग तपस्या के आगे, व्यन्तर की माया नष्ट हुई ।
प्रभुवर को केवल ज्ञान हुआ, दुष्टों की बुद्धि शुद्ध हुई ।।
उस दुष्ट कमठ की बुद्धि ने, दस भव तक प्रभु को कष्ट दिया।
नाना योनि में जाकर के, बैरी ने बदला खूब लिया ।।

पर बैर–बैर को नहि मारे, यह तो संसार बढ़ाता है ।
शुभ क्षमा भाव के धारण से, आतम चिर शान्ति पाता है ।।
संसार सुखों की चाह न कर, ये कष्ट घनेरे देते हैं ।
आलोक तपस्या त्याग धर्म, ऋद्धी–सिद्धी भर देते हैं ।।
हो निर्विकल्प और शान्ति रूप, आतम के रंग में रंगना है ।
शुभ ज्ञान ध्यान के द्वारा ही, कर्मों के शैल हटाना है ।।
मुक्तिपथ के दिग्दर्शक बन, भक्तों को शिक्षा देते हो ।
चरणों में जो भी आता है, उसके संकट हर लेते हो ।।
संसार मोह को मैं निश्चित, चरणों में तेरे छोड़ूँगा ।
अरू छोड़ूँ जग के रिश्ते को, नाता मुक्ति से जोड़ूँगा ।।
जो भी तेरी शरणा आता, झोली भर कर ले जाता है ।
आशाएँ सब पूरी होती, मनवांछित फल पा जाता है ।।
मैं भाव सहित पूजा करता, प्रभु पूजा का शुभ फल देना ।
मैं चलूँ आपके पदचिन्हों, वरदान यही मुझको देना ।।

सोरठा

अष्ट कर्म का नाश, मोक्ष गये हो नाथ तुम ।
मुक्ति पुरी हो वास, भाव सहित पूजा करूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

सम्पूर्ण गुणों की खान हो, निजानन्द में लीन ।
भक्ति मैं करता रहूँ, करूँ कर्म सब क्षीण ।।

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप मंत्र ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

अथ समुच्चय पूजन

दोहा

तीर्थंकर बीसों नमो, शिखर मोक्ष स्थान ।
असंख्यात मुनि शिव गये, पाया मुक्ति सु थान ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रात् असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर - अवतर संवौषट् आह्वाननं

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रात् असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रात् असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं

मिथ्यात्व महा का अंधेरा, घनघोर ये जग में छाया है ।
मिथ्यात्व गले शुभ धर्म पले, मन पूजन कर हर्षाया है॥
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चिंतन चिंता से दूर रहे, संताप निरंतर देता है ।
चंदन सम शीतल वचन प्रभु, संताप तुरन्त हर लेता है ॥
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षण भंगुर जग का वैभव है, पानी बुलबुल सम गिर जाता।
अक्षत शुभ चरण चढ़ा करके, अक्षय पद की आशा करता॥
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये काम व्यथा की व्याकुलता, जग में भटकाती फिरती है।
तुम वाणी पुष्प सुगंधी सम, शुभ समवशरण में खिरती है।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो काम बाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब तक कर्मों का वास रहे, ये क्षुधा वेदनी भटकाये ।
चरणों नैवेद्य चढ़ाता हूँ, जो नाश क्षुधा का करवाये ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ सम्यक ज्ञान का दीप प्रभो, मुक्ति पथ का उजियारा है।
रत्नों का दीप सजा लाया, भावों को लगता प्यारा है ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जब धुआं उड़ेगा कर्मों का, सच्चा आनन्द तब आयेगा ।
फिर भी यह धूप दशांगी से, मन कुछ संतोष तो पायेगा ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म कांट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुरूषार्थ निरंतर करता हूँ, पर सम्यक् कार्य न होता है ।
भावों से फल अर्पण करता, वह बीज मुक्ति का बोता है ।।
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म कांट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ।।

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य बना, मैं निजपद पाने आया हूँ ।
आठों कर्मों का धुआं उड़ा, समभाव साथ में लाया हूँ ॥
सम्मेद गिरि से असंख्यात मुनि, कर्म काट कर मोक्ष गये ।
उनकी पावन रज पाकर के, शुभ आज हमारे भाव भये ॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः, श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री आदिनाथ जी (कैलाश पर्वत) अर्घ्य

(तर्ज : हे दीनबन्धु श्रीपति............)

कैलाश गिरि से आप प्रभु मोक्ष पधारे ।
ये कर्म हो भय भीत सभी भागे थे सारे ।।
सब योग को पायेके करे वंदना तेरी ।
सब टूटेगी कर्मों की कड़ी आज तो मेरी ।।
'स्वस्ति' करे गुणगान, ध्यान से प्रभु तेरा ।
हो जाये नष्ट कर्म प्रभु ज्ञान बसेरा ।।
मैं अष्ट द्रव्य थाल सजा, चरणों में लाया ।
आनंद से ही झूम-झूम, अर्घ्य चढ़ाया ।।

पद्धरि छंद

सृष्टि में 'स्वस्ति' के कर्त्ता, तुम प्रजापति बन कर आये ।
जा बैठे थे कैलाश गिरि, वहां मुक्तिरमा को परिणाये ।
प्रभु अष्ट द्रव्य हम लेकर आये, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

दोहा

आदिनाथ की भक्ति से, होता निज कल्याण ।
स्वार्थ न हो यदि भक्ति में, मिल जाये भगवान ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि दश सहस्र मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री कैलाशगिरि सिद्ध क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री वासुपूज्य जी (चंपापुर)

तज काम क्रोध को, लोभ मोह को, तजकर के वासूपूज्य बने।
पृथ्वीतल के आभूषण हो, तुम दुष्ट कर्म को शीघ्र हने ।।
प्रभु अष्ट द्रव्य हम लेकर आये, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

दोहा

वासुपूज्य वसुपूज्य हैं, तप कीना घनघोर ।
चंपापुर वह क्षेत्र है, रत्न झरे चहुंओर ।।
स्वर्गपुरी सम शोभता, चंपापुर स्थान ।
वासुपूज्य भगवान ने, पाया पद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि एक सहस्त्र मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्यः श्री चम्पापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री नेमिनाथ जी (गिरनार जी)

जा पहुंचे थे गिरनारी तुम, तज दीनी थी जग की माया ।
फिर ध्यान अग्नि में जला कर्म, तुम अमित अचल सुख को पाया।
प्रभु अष्ट द्रव्य हम लेकर आये, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

दोहा

जूनागढ़ वैराग्य ले, गिरनारी पर आये ।
करी तपस्या शैल पर, मुक्ति सुंदरी पाय ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शंबु प्रद्युम्न अनिरूद्ध आदि सहित 72 करोड़ 700 मुनि गिरनार पर्वत से मोक्ष पधारे अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री महावीर स्वामी (पावापुर)

दोहा

है विपुल ज्ञान की राशि तुम, तत्त्वों का सार बताया है ।
कर नीर क्षीर सम कर्म वीर, है धर्म अहिंसा गाया है ।।

प्रभु अष्ट द्रव्य हम लेकर आये, चरणन अर्घ्य चढ़ाने को ।
मन वच तन से भक्ति करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाने को ।।

दोहा

धीर वीर महावीर है, सन्मति सम्यग्ज्ञान ।
अतिवीर वर्द्धमान का, धरूँ हृदय में ध्यान ।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रादि षट्बिंशत् मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: पावापुर पद्य सरोवरस्थ सिद्ध क्षेत्रेभ्य: अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्य

तीर्थंकर के मार्ग पर, चले अनंतों जीव ।
कर्म काट शिवपुर गये, पावे सौख्य अतीव ।।
भरत क्षेत्र की भूमि पर, सिद्ध क्षेत्र स्थान ।
अतिशय धारी देव को, शत्-शत् करूँ प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं श्री भरत क्षेत्र संबंधी सिद्ध क्षेत्रातिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्य

जंबू पुष्कर द्वीप में, हुये सिद्ध भगवान ।
सिद्ध धातकी खंड को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन ।।

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप विद्यमान सिद्ध क्षेत्रेभ्य: अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्य

चौबीसी तीसों को ध्याय, भूतानागत के गुण गाय।
संप्रति काल विदेह के मांहि, लेकर कर में अर्घ्य चढ़ाहि ।।

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप भूत भविष्यत् वर्तमान काल संबंधी त्रिंशत् चतुर्विंशति जिनेन्द्रभ्य: अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ्य

चैत्य अकृत्रिम लोक में जान, उनको नित प्रति करहुँ प्रणाम।
जग के सारे तीरथ धाम, धोक लगाऊँ आठों याम ।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंधी अकृत्रिम जिनालय जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्पूर्ण जयमाला

दोहा

संपूर्ण जगत में श्रेष्ठ है, गिरि सम्मेद महान ।
सर पर रज धारण करूँ, शत्-शत् करूँ प्रणाम ॥

चौपाई

चारों धाम महासुख दाय, वंदन करने जो भी आये ।
पंच पाप मिथ्या मद जाये, अघ नाशन का यही उपाय ।
तीरथ अति ही अतिशय वान, जहं ते मोक्ष गये भगवान।
तारण तरण जिहाज समान, भवदधि पार करे दे ज्ञान ।
भक्ति संकट दूर भगाय, पूजन करने भाव को लाये ।
हरष-हरष के हम गुण गाय, तो भी यह मन नाहि अघाय ।
टोंक-टोंक पर चरण के चिन्ह, हर्षे इन्द्र चढ़े अरविन्द ।
चौबीसों तीर्थंकर धाम, मिलता हमें यहां विश्राम ।
अनन्त चतुष्टय धर कर आप, क्षण भर में नश गये संताप ।
पर की छोड़ी आपने आश, वास किया गिरि जा कैलाश ।
अजितनाथ संभव प्रभु नाम, कार्य असंभव किया सुनाम ।
अभिनंदन वंदन के जोग, करी तपस्या मिटे सु रोग ।
सुमति पद्म ने छोड़ी माया, छोड़ा जग पाई शिव छाया ।
श्री सुपार्श्व चंदा प्रभु ध्यान, ध्याओ होवे सम्यक् ज्ञान ।
श्री श्रेयांस वासु जिन पूज्य, नित प्रति इनके चरण सु पूज ।
विमल अनंत चतुष्टय धार, भव सागर से करते पार ।
धर्म शांति की वाणी प्यारी, जग में आप हुये अवतारी ।
कुंथु अरह वैभव जग पाया, पर न भाई जग की माया ।
मल्लि मुनि सुव्रत जिनभाई, मुक्ति इन्हें लेने को आई ।
नमि नेमी को नमन है करते, भक्ति से सब अवगुण हरते ।
पारस प्रभु की शरण में आओ, समता रस आस्वादन पाओ।
जिओ और जीने दो वाणी, सब जीवों की है कल्याणी ।

महावीर की निर्मल छाया, कष्टों में भी आनन्द आया ।
'स्वस्ति' परम क्षेत्र का दर्शन, पापों का करता है घर्षण ।
श्रद्धा से रज धारण करना, तीर्थ क्षेत्र को वंदन करना ।

दोहा

पुण्य बढ़े और अघ नशे, तीरथ वंदन जाये ।
सिद्ध भूमि शुभ क्षेत्र की, महिमा वरणी न जाये ।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यों जयमाला पूर्णार्घ्यम्
निर्वपामीति स्वाहा । (श्रीफल समर्पित करें)

अंतिम क्षण हो मम यहां, यही भाव फल सार ।
'स्वस्ति' करती नमन है, भवदधि उतरे पार ।।

इत्याशीर्वाद !
(1 माला पूष्पांजलि से) ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यों नमः

समुच्चय महार्घ्य

गीता छंद

अरिहंत सिद्धाचार्य पूजूँ, ज्ञानी श्रुत सुमिरण करूं।
श्री मुनिवरों के चरण पूजूँ, वाणी माँ हृदय धरूं।।

षोडश रत्नत्रय धर्म पूजूँ, आत्महित संयम धरूं।
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, जिन प्रभु वंदन करूं।।

जिन चैत्य चैत्यालय दरशकर, भावना शुभ भाऊँगा।
श्री मेरु नंदीश्वर जिनालय, वंदना को जाऊँगा।।

सब तीर्थ, क्षेत्र अतिशयों को, देव नर पूजें सदा।
कैलाश गिर सम्मेद की, निज प्रातः भक्ति हो सदा।।

चंपापुरी - पावापुरी, श्री सिद्ध क्षेत्रों को नमन्।
चौबीस श्री जिनराज की, भक्ति से खिलता है चमन।।

दोहा

अष्ट द्रव्य थाली सजा, प्रभु पूजन को आय।
सहस्त्र नाम वाले प्रभु, चरणों अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृतिम - अकृत्रिम जिन चैत्यालय, नंदीश्वर द्वीप सम्बंधित जिन चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो, जिनेद्रेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ

श्री चंद्र सम हे शांति प्रभु जी, आऊँ अब शरणा तेरे।
हम शील गुणव्रत धार लें, औ दोष सब जग के हरें।।

सुर देव नर पूजें सदा, श्री शान्ति हित ध्याते उन्हें।
चौंतीस अतिशय युक्त हैं, सुख भव्यजन पाते जिन्हें।।

परम शान्ति अनूप आनन्द, ध्यान में तल्लीन हैं।
पाई जिससे सिद्धि तुमने, वह रतनत्रय तीन हैं।।

सम्पूर्ण प्राणी मात्र को, और ध्यानी को सुख सम्पदा।
राजा प्रजा अरू सर्वजन को, कष्ट ना होवे कदा।।

होवे सुवृष्टि कुदृष्टि खोवे, व्याधि सब की दूर हों।
त्रैलोक्य नाथ की भक्ति से, हृदय सदा भरपूर हो।।

झूठ हिंसा क्रोध कर्मों से किया, तन मन मलिन।
सत्य संयम ध्यान कर, खिल जावे भव्यों का सुमन।।

दुष्कृत्य और दुःकाल सब, प्रभु पास न आवें कभी।
पा नेह दृष्टि तेरी प्रभु जी, स्वस्थ जन होवें सभी।।

दोहा

चहुँ कर्मो को नष्ट कर, लिया है केवलज्ञान।
तीन लोक में शान्ति हो, त्रिलोकी भगवान।।

गीतिका छंद

हृदय कमल हो ज्ञान लक्ष्मी, पाऊँ फिर परमात्मा।
गुण अनंतानंत धारूँ, ध्याऊँ सदा निज आत्मा।।
वाणी हित-मित नित उचारें, चतुर्विधि सेवा करें।
श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र मेरे, अष्ट कर्मों को हरें।।

तव चरण हो मम हृदय में, हृदय चरणों में रहे।
श्री तरण तारण भव निवारण, त्याग कर मुक्ति गहे।।

पूजन करी प्रभु आपकी, यदि हो गई गलती कहीं।
अज्ञान और प्रमाद वश, मैंने उसे जाना नहीं।।

क्षमा करना, क्षमा करना, क्षमा करना नाथ जी।
शेष जीवन जो है मेरा, तव चरण हो साथ जी।।

कर्म क्षय हो बोधि पाऊँ, गमन हो सुगति जी।
अंत समय समाधि पाऊँ, ध्यान हो तुम चरण जी।।

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

।।नौ बार णमोकर मन्त्र का जाप करें।।

विसर्जन

गीतिका छंद

जानकर अन्जाने में प्रभु, हो गई जो गल्तियाँ।
प्रायश्चित दे क्षमा करना, शुद्ध हो मेरा जिया।।

मन्त्र पूजन ज्ञान ध्यान शुभाचरण से हीन हूँ।
बुद्धि मेरी शुद्ध होवे, प्रभु चरण में लीन हूँ।।

नित्य पूजा भक्ति से, आराधना मैं नित करूँ।
सर्व दोषों का हरण कर, कर्म को नित परिहरूँ।।
मेरी पूजा भक्ति में, आये यहाँ जो देव गण।
मैं करूँ उनका विसर्जन, और प्रभु चरणों नमन।।

।।इत्याशीर्वादः।।

श्री सम्मेद शिखर चालीसा

अरिहंत सिद्धाचार्य को, नमन करूँ शतबार ।
सर्वसाधु और सरस्वती, देवें सौख्य अपार ॥
सम्मेद शिखर की भूमि का, धरूँ हृदय में ध्यान ।
दर्शन वंदन भक्ति से, शत्-शत् करूँ प्रणाम ॥

जय जय जय सम्मेद शिखर वर, तीर्थों में यह मुख्य गिरिवर ।
इसका कण-कण भी पावन है, होवे सौ-सौ बार नमन है ।
भूले भटके कर्म के मारे, आये शरणा जीव ये सारे ।
है अचिंत्य महिमा गुणगान, शुद्ध भाव शाश्वत सुख खान ।
है इतिहास अनादि अनन्त, आते ही मिल जाता पंथ ।
न है कोई मिटाने वाला, तोड़े कर्मों के जंजाला ।
भूत भविष्यत काल हो भावी, प्रलय काल न होते हावी ।
इन्द्र देव गण रक्षा करते, भक्त की आशा पूरी करते ।
दूर-दूर से यात्री आवें, दर्शन कर तन मन हर्षावें ।।

टोंक-टोंक पर दर्शन पावें, रोम-रोम पुलकित हो जावे ।
एक-एक टोंकों के दर्शन, फल करोड़ उपवास का अर्जन ।
होय असाध्य असंभव काम, किया स्मरण लिया जो नाम ।
दर्शन कर संकट को खोवें, चमत्कार उनके संग होवे ।
आगम शास्त्र पुराण बताते, महिमा इसकी इन्द्र भी गाते ।
चौबीसों तीर्थंकर धाम, यही से पावें मोक्ष निधान ।
जैन अजैन सभी जन आते, पर्वत ऊपर दर्श को जाते ।
भाव सहित वंदन जो करते, नरक पशु योनि न धरते ।
नयन बंद कर ध्यान लगाओ, श्री सम्मेद के दर्शन पाओ ।
चौपड़ा कुंड में पार्श्व का धाम, वन्दन कर करते विश्राम ।
दर्शन भव्य जीव ही करते, धर्म धार कर मुक्ति वरते ।
व्यसन बुराई दर्श से छूटे, नाता न तेरे दर से टूटे ।
मानव को शक्ति दे देता, संकट सब क्षण में हर लेता ।
हरे भरे वृक्षों की डाली, झूम रही होकर मतवाली ।
करूँ अर्ज मैं कर को जोड़, तू है चंदा मैं हूँ चकोर ।
मधुबन मंदिर शिखर सुहाना, दर्शन प्रथम यहाँ का पाना ।
गुरूवर सुमति सागर आए, त्यागी व्रती आश्रम बनवायें ।
पीत वर्ण पारस की प्रतिमा, आकर निश्चित दर्शन करना ।
आत्म-ज्योति है सिद्ध स्वरूप, सिद्धालय का बनना भूप ।
आत्म ज्ञान आकर प्रगटाना, शुद्ध ज्ञान की ज्योति जलाना ।
सिद्धों की नित करोगे जाप, होंगे दूर भवों के ताप ।
पारस गुफा में ध्यान लगाओ, आत्म शांति को निश्चित पाओ ।
पाप छोड़ तुम पुण्य को भर दो, आशा मेरी पूरी कर दो ।
शब्द अर्थ भावों से वंदन, दर्श करूँ हो जाऊँ चंदन ।
अज्ञानी हूँ ज्ञानी कर दो, खाली झोली को तुम भर दो ।

जग के दुखों ने आ घेरा, छूटे जन्म मरण का फेरा ।
बूढ़ा बच्चा और जवान, करते हैं तेरा गुणगान ।
डोल रही भव सागर नैया, प्रभुवर तुम हो एक खिवैया ।
जग में घूम-घूम कर हारे, अब वरदान मुझे दो सारे ।
चरणों में वंदन को आऊँ, बार-बार दर्शन को पाऊँ ।
'स्वस्ति' चाहे शरण में रहना, और नहीं कुछ तुम से कहना ।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, पाठ करे जो कोए,
सुख वृद्धि होवे तुरंत, दुख दरिद्र सब खोये ।
तीर्थंकर श्री बीस जिन, गए जहाँ निर्वाण,
उनकी पावन माटी को, शत-शत करूँ प्रणाम ॥

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

(श्री सम्मेद शिखरजी स्वर्ण भद्र कूट)

दोहा

ध्यान करूँ अरिहन्त का, बंदू सिद्ध अनन्त ।
उपाध्याय आचार्य से, मिले मुक्ति का पंथ ॥
श्री सम्मेद की भूमि से, पाया पद निर्वाण ।
संकट हारी पार्श्व को, शत्-शत् करूँ प्रणाम ॥

जय-जय-जय श्री पारस स्वामी, कर्मकाट तुम हुए अकामी ।
श्रद्धा भक्ति हृदय से ध्याऊँ, तुम चरणों में शीष झुकाऊँ ।
राजा अश्वसेन के प्यारे, जग-जननी आँखों के तारे ।
माँ को सोलह स्वप्न दिखाये, वामा के जब गर्भ में आये ।
पौष कृष्ण एकादशी प्यारी, वसुधा पर आये अवतारी ।
जंगल गये मंगल करने को, देखा वहाँ एक तपसी को ।

उसने लकड़ी खूब जलाई, अंदर नाग नाग-नागनी भाई ।
पारस ने तब ज्ञान कराया, अर्द्ध जले अहि बाहर आया ।
उन्हें मंत्र नवकार सुनाया, पद्मावती धरणेन्द्र बनाया ।
बैर बांध तपसी मरता है, देव नाम संवर धरता है ।
इस जग को जब अथिर है जाना, फिर विराग का पहना बाना।
वन में जाकर ध्यान लगाये, इक दिन कमठ वहां पर आये ।
ओले शोले पत्थर पानी, बरसाकर की थी मन मानी ।
ध्यान लीन प्रभु नहिं डिगे थे, सिंहासन देवों के हिले थे ।
आये पद्मावती धरणेन्दर, सेवा की थी छत्र बनाकर ।
समता से उपसर्ग सहा था, केवलज्ञान का नीर बहा था ।
भक्ति करते देवचरण की, रचना हुई थी समवशरण की ।
प्रभु ने फिर उपदेश दिया था, सबने सम्यक् ज्ञान लिया था ।
पत्थर को पारस सम करते, राग द्वेष के तम को हरते ।
दर्शन जगह-जगह है दीना, चमत्कार सबके संग कीना ।
सबसे ज्यादा भक्त तुम्हारे, तुम तो हो भक्तों को प्यारे ।
गूंगे को दे दी थी वाणी, पढ़े बैठकर वो जिनवाणी ।
लंगड़ा पर्वत दौड़ के चाले, अंधा तेरे दर्श को पा ले ।
खाली गोद में पुत्र है आवे, निर्धन की झोली भर जावे ।
गगन बीच है शिखर तुम्हारा, दूर-दूर से दिखे नजारा ।
महिमा सुर नर मिलकर गावें, तो भी न पूरी कर पावें ।
सिद्ध अनंतो मोक्ष पधारे, उनको भी है नमन् हमारे ।
रोग शोक संकट टल जावे, जो भी वंदन करने आवे ।
सभी चरण के वंदन करके, पार्श्वनाथ की पूजा करते ।
पारस प्रभु के चरण पखारे, भाव शुद्ध हो आत्म निहारे ।
भक्तों ने की जय-जयकारा, पारस प्रभु का नाम पुकारा ।
चढ़ते-चढ़ते थक जाते हैं, पर मन में शांति पाते हैं ।
प्रभु से शक्ति स्वयं ही आती, सब भक्तों को पास बुलाती ।
कड़ी तपस्या खड़ी चढ़ाई, श्रद्धा में मजबूती आई ।

श्रावण शुक्ला सप्तमी आई, श्री सम्मेद की भूमि पाई ।
अंत समय जब ध्यान लगाया, गुफा शिला से मोक्ष है पाया ।
करूणा सागर करूणा कीजे, शुद्ध आत्मा का वर दीजे ।
हम भक्तों की है प्रभु आशा, शिवपुर में हो मेरा वासा ।
स्वामी हम हैं दास तिहारे, इन नयनों से तुम्हें निहारें ।
'स्वस्ति' चाहे शरण में रहना, और नहीं कुछ तुमसे कहना ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, पढ़े सुने जो कोय ।
सुख समृद्धि सब लहें, मुक्ति तुरत हि होय ।।
पारस सम हैं पार्श्वनाथ, संकट हरण तीर्थेश ।
चरण शरण में हूँ पड़ा, पाऊँ मुक्ति जिनेश ।।

आरती श्री पार्श्वनाथ

(तर्ज : भक्ति बेकरार.........)

पारस तेरा ध्यान है, चरणों में प्रणाम है ।
आरती करने आये हम, लेकर तेरा नाम हैं।।
हो......वामा की आँखों के तारे, अश्वसेन सुत प्यारे जी
नगर बनारस जन्म लिया है, स्वर्ग से इन्द्र पधारे जी...।।1।।
पारस ....
हो...... किया घोर उपसर्ग कमठ ने, समता भाव दिखाया जी,
ओले-शोले पत्थर पानी, ऊपर से बरसाया जी ।।2।।
पारस ....
हो......पद्मावती धरणेन्द्र ने आकर, प्रभु पर छत्र लगाया जी,
केवल ज्ञान की ज्योति जगी तब, समोशरण रचवाया जी ।।3।।
पारस ....
हो...... गिरि सम्मेद शिखर पर जाके, मोक्ष महापद पाया जी,
जब तक हमको मोक्ष न मिलता, चरण में ध्यान लगाया जी।।4।।
पारस ....
हो.......जो भी शरण तुम्हारी आता, सबकी पीड़ा हरते हो-2
चिन्तामणि हो कल्पवृक्ष सम, संभव कारज करते हो ।।5।।
पारस ....

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम्

भुजंग-प्रयात छन्द

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं । शतेन्द्र सु पूजै भजैं नाय शीशं।।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमों जोड़ि हाथ। नमो देव-देवं सदा पार्श्वनाथं।।1।।

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गहयो तू छुड़ावै । महा आगतैं नागतैं तू बचावे ।।
महावीरतैं युद्ध में तू जितावै । महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै ।।2।।

दुखी दुखहर्ता सुखी सुखकर्ता । सदा सेवकों को महानन्द भर्ता ।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं । विषं डंकिनी विध्न के भय अवाचां।।3।।

दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने । अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने ।।
महासंकटों से निकारे विधाता । सबै संपदा सर्व को देहि दाता।।4।।

महाचोर को वज्रको भय निवारे । महापौन के पुंजते तू उबारै ।।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ-धारा। महालोभ-शैलेश को वज्र भारा ।।5।।

महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं । महा-कर्म कांतार को दौ प्रधानं।।
किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी। हरयोमान तूदैत्य को हो अकामी ।।6।

तुही कल्पवृक्ष तुही कामधेनु । तुहीं दिव्य चिंतामणी नाग एनं ।।
पशु नर्क के दुखतैं तू छुडावै । महास्वर्गतैं मुक्ति मैं तू बसावै ।।7।।

करै लोह को हम पाषाण नामी । रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी ।।
करै सेव ताकी करैं देव सेवा । सुने वैन सोही लहै ज्ञान मेवा ।।8।।

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै । धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै ।।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे । तुम्हारी कृपा तैंसरैं काज मेरे ।।9।।

दोहा

गणधर इन्द्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीति निहारकैं, कीजे आप समान ।।10।।

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

दोहा

वीतराग वंदौ सदा, भावसहित सिरनाय ।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ॥

चौपाई

कर्म नाश निर्वाण को पाया, श्री सम्मेद को शीश झुकाया ।
सिद्ध शुद्ध पावन हैं तीरथ, यहीं से मिल जाता मुक्ति पथ ॥

आदिनाथ जी अष्टापद से, वासुपूज्य जी चंपापुर से ।
नेमिनाथ गिरनार के स्वामी, भक्त चरण में करें नमामि ॥

अंतिम तन अंतिम तीर्थंकर, शांति देने में हो शंकर ।
पावापुर वीरा रजधानी, मोक्ष गये थे यहीं से स्वामी ॥

संबू प्रद्युम्न अनिरुद्ध भाई, कोड़ि मुनि संग दीक्षा पाई ।
श्री गिरनार को शीश झुकाऊँ, वंदन कर मन में हर्षाऊँ ॥

राम चन्द्र के पुत्र महान, लव कुश मुनि का मुक्ति धाम ।
पांच कोड़ि संग मोक्ष पधारे, पावागिर को नमन हमारे ॥

पांडव शुक्ल ध्यान में लीन, सह उपसर्ग पा मुक्ति प्रवीण ।
आठ कोड़ि संग मोक्ष को जायें, शत्रुंजय को शीश झुकायें ॥

गजकुमार बलभद्र जिनेशा, आठ कोड़ि संग बने मुनीशा ।
श्री गजपंथ हुआ विख्याता, भक्त यहीं से शीश झुकाता ॥

राम हनु सुग्रीव तपस्या, दूर हुई थी कर्म समस्या ।
आठ कोड़ि मुनिवर की युक्ति, तुंगी गिरि से पाई मुक्ति ॥

नंग अनंग गुरु महाराज, पाँच कोड़ि अरु अर्द्ध सु साज ।
सोनागिरि को धाम बनाया, बंदू आतम का सुख पाया ॥

रेवातट पर सिद्धवर कूट, काम देव दश कर्म से छूट ।
द्वि चक्री पहुँचे शिवधाम, नित प्रति करते उन्हें प्रणाम ॥

इंद्रजीत भ्राता है कर्ण, कर्म किये उत्कृष्ट सुवर्ण ।
बड़वानी को मिली प्रसिद्धि, नमन करूँ पाई थी सिद्धि ॥
स्वर्ण भद्र मुनिवर का ध्यान, कर्म नाश दिया मुक्ति धाम ।
चार मुनि भी करें तपस्या, पावा गिरि से मिटी समस्या ॥

गुरुदत्तादि आतम के गुरु, आत्म ध्यान से धर्म हो शुरू ।
द्रौणागिरि पर्वत की महिमा, नमन करें गाते हैं गरिमा ॥

नाग कुमार बाल महाबाल, मुनिवर बन तोड़ा जग जाल ।
अष्टापद से करम को नाशे, वंदन करते आत्म प्रकाशे ॥

मुक्तागिरि मुक्ति का धाम, साढ़े तीन कोड़ि मुनि नाम ।
आतम से परमातम स्वामी, नमन करूँ, मुक्ति के गामी ॥

कुलभूषण देशभूषण मुनिवर, करी तपस्या बने थे जिनवर ।
कुंथलगिरि से मोक्ष को पाया, भाव सहित आ शीश झुकाया ॥

दशरथ पुत्र पाँच सौ गाये, कोटि मुनि संग में बतलाये ।
कोटि शिला से मोक्ष को पाया, भक्तों ने जयकार लगाया ॥

पार्श्व प्रभु का नाम निराला, समवशरण में हो उजियाला ।
वरदत्तादि श्री जिनराज, नयनागिरि नमूँ पावे राज ॥

जम्बू स्वामी मोक्ष पधारे, पंचम काल में मुक्ति सिधारे ।
मथुरा का उद्यान सुहाया, भक्त ने आकर शीश झुकाया ॥

द्वि सहस सन आठ लिखा है, सिद्ध भक्ति का स्वाद चखा है ।
सिद्ध भूमि को शीश झुकाऊँ, 'स्वस्ति' वंदन करने आऊँ ॥

दोहा

भव-भव डोले आत्मा, घूम रहा दिन रैन ।
सिद्धों सी सिद्धि मिले, मिले आत्म को चैन ॥

परम विदुषी लेखिका आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी द्वारा रचित कृतियां

श्री जिनपद पूजांजलि (विशेष कृति)

विधान संग्रह

1. श्री कल्पद्रुम विधान 2. श्री इन्द्रध्वज विधान 3. श्री सिद्धचक्र विधान 4. श्री सम्यक् विधान संग्रह 5. श्री मनुष्य लोक विधान 6. श्री श्रुत स्कन्ध विधान 7. श्री चौबीसी विधान 8. श्री नवग्रह शांति विधान 9. श्री कल्याण मंदिर विधान 10. श्री दश लक्षण विधान 11. श्री पंचमेरू विधान 12. श्री ऋषि मंडल विधान 13. श्री कर्म दहन विधान 14. श्री समवशरण विधान 15. श्री चौंसठ ऋद्धि विधान 16. श्री यॉग मंडल विधान 17. श्री पंच परमेष्ठी विधान 18. श्री पंच कल्याणक विधान 19. श्री वास्तु शुद्धि विधान 20. तीर्थंकर विधान संग्रह 21. श्री पंच बालयति विधान 22. श्री सम्मेद शिखर विधान 23. श्री सोनागिर विधान 24. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार विधान 25. श्री आदिनाथ विधान 26. श्री पद्मप्रभु विधान 27. श्री चन्द्रप्रभ विधान 28. श्री वासुपूज्य विधान 29. श्री विमलनाथ विधान 30. श्री शान्तिनाथ विधान 31. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 32. श्री नेमिनाथ विधान 33. श्री पार्श्वनाथ विधान 34. श्री महावीर विधान 35. श्री जम्बू स्वामी विधान 36. श्री भक्तामर स्तोत्र विधान, 37. श्री नन्दीशवरद्वीप लघु विधान, 38. श्री रत्नत्रय विधान, 39. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग -1, 40. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग-2, 41. श्री चरित्र शुद्धि विधान 42. श्री संभवनाथ विधान, 43. श्री सोलहकारण विधान, 44. श्री सुमतिनाथ विधान, 45. श्री अभिनंदन नाथ विधान, 46. श्री कुन्थुनाथ विधान, 47. श्री अजितनाथ विधान

काव्य संग्रह

1. मेरी कलम से 2. भजन संग्रह 3. भजन सरिता 4. अमृत की बूंदे 5. श्री सम्मेद शिखर चालीसा 6. बड़ा ही महत्व है 7. आरती ही सारथी 8. जिन ज्ञान किरण 9. भक्ति संग्रह 10. काव्य वाटिका (भाग-1, 2) 11. श्री भक्तामर जी पाठ (हिन्दी) 12. प्रभु भक्ति की पोटली (चालीसा संग्रह) 13. भक्ति पुंज 14. आत्मा की आवाज 15. विनयांजलि 16. श्री सहस नाथ स्तोत्र (हिन्दी रुपान्तरण) 17. पुण्य वर्धिनी 18. आचार्यो की प्रभु भक्ति (हिन्दी पद्यानुवाद) 19. भक्ति की संम्पदा (स्तोत्र संग्रह)

पूजन संग्रह

1. श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन 2. दीपावली पूजन 3. श्री आदिनाथ पूजन एवं चालीसा (रानीला) 4. श्री आदिनाथ पूजन अतिशय क्षेत्र (चाँदखेड़ी) 5. पद्म प्रभु पूजन (शाहपुर) 6. श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन संग्रह (सोनागिर जी) 7. श्री चन्द्र प्रभु पूजा (अतिशय क्षेत्र, तिजारा जी) 8. श्री चंद्रप्रभ चौबीसी जिनालय पूजन (कैराना) 9. श्री वासुपूज्य जिन पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र चंपापुरजी) 10. शांतिनाथ पूजन (सूर्य नगर) 11. श्री नेमीनाथ पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र गिरनार जी) 12. श्री पार्श्वनाथ पूजन एवं चालीसा 13. पार्श्वनाथ पूजन (जलालाबाद) 14. श्री पार्श्वनाथ, हांसी अतिशय क्षेत्र 15. अतिशय क्षेत्र बड़ागांव पूजा 16. श्री महावीर जिन पूजन संग्रह 17. स्वस्ति जिन अर्चना (सिद्ध क्षेत्र पावापुरजी) 18. श्री गोम्टेश्वर बाहुबली स्वामी विनयांजलि 19. कुंदकुंद स्वामी पूजा संग्रह, बारा (राजस्थान) 20. गुरू अर्चना (आ. 108 सन्मतिसागर जी) 21. श्री शांतिनाथ पूजा संग्रह (झालरापाटन) 22. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन, भजन, चालीसा (जहाजपुर) 23. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन एवं चालीसा (किरठल)

गद्य संग्रह

1. दीक्षा कठिन परीक्षा 2. जैन त्यौहार कैसे मनायें ? 3. प्रतिक्रमण (किये अपराध जो हमने) 4. स्वस्ति आत्म बोध 5. राग से वैराग्य की ओर 6. मुक्ति सोपान (धार्मिक सांप सीढ़ी) 7. श्री ऋषभदेव अनुशीलन 8. नानी की कहानी (भाग-1,2,3) 9. प्रभावना प्रवाह (भाग-1, 2) 10. आओ दीपावली पूजन करें 11. दीपावली कैसे मनायें। 12. टर्निंग पॉइण्ट (भाग-1, 2) 13. वीतरागी का आकर्षण 14. ॐ नमः सबको क्षमा 15. आहार को समझे औषधि 16. स्मार्ट कौन? 17. आप V.I.P. है